॥ श्रीः ॥

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

45

महाकविकालिदासविरचितं

मालविकाग्निमित्रम्

संस्कृत-हिन्दीव्याख्याद्वयोपेतम्

व्याख्याकार:

डॉ. रमाशंकर पाण्डेय

एम० ए०, पी-एच० डी०

साहित्याचार्य, साहित्यरत्न

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

पात्र-परिचय

पुरुष-पात्र

सूत्रधार—नाटक का प्रबन्धक।
पारिपार्श्वक—सूत्रधार का सहायक।
अग्निमित्र—विदिशा-नरेश (नायक)।
वाहतक—अग्निमित्र का मन्त्री।
गौतम—विदूषक (राजा का मित्र)।
मौद्गल्य—कञ्चुकी (वृद्ध ब्राह्मण)।
गणदास—नाट्याचार्य।
हरदत्त—नाट्याचार्य।
सारस—कुब्ज (धारिणी का भृत्य)
वैतालिक— स्तुति गायक।

स्त्री-पात्र

मालविका—माधवसेन की बहन (नायिका)।
धारिणी—अग्निमित्र की पटरानी।
इरावती—अग्निमित्र की दूसरी रानी।
कौशिकी—(परिव्राजिका) माधवसेन के सचिव सुमति की विधवा बहन।
बकुलावलिका—धारिणी की दासी (मालविका की सखी)।
मधुकरिका—मालिन।
कौमुदिका—दासी।
समाहितिका—परिव्राजिका की सेविका।
निपुणिका—इरावती की दासी।
जयसेना—प्रतीहारी।
मदनिका—
ज्योत्स्निका— } माधव से भेजी गई शिल्पी दासियाँ।

उल्लिखित-पात्र

यज्ञसेन—विदर्भ का राजा।
माधवसेन—यज्ञसेन का चचेरा भाई (मालविका का भाई)।
सुमति—माधवसेन का सचिव।
वसुमित्र—अग्निमित्र का पुत्र।
पुष्यमित्र—अग्निमित्र का पिता।
वीरसेन—धारिणी का भाई (सेनापति)।
मौर्यसचिव—मौर्यवंशियों का मन्त्री (यज्ञसेन का साला)।
ध्रुवसिद्धि—विषवैद्य।
वसुलक्ष्मी—राजकुमारी (अग्निमित्र की पुत्री)।
माधविका—भू-गृह में नियुक्त सेविका।
चन्द्रिका—रानी इरावती की दासी।

भूमिका

महाकवि कालिदास

महाकवि कालिदास संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। यही कारण है कि भारतीय परम्परा ने इन्हें "कविकुलगुरु" की उपाधि से विभूषित किया है। इन्होने "कुमारसम्भव" एवं "रघुवंश" नामक दो महाकाव्य, मालविकाग्निमित्र, "विक्रमोर्वशीय" एवं "अभिज्ञानशाकुन्तल" नामक तीन नाटक तथा "ऋतुसंहार" और "मेघदूत" नामक दो "गीति काव्य" लिखे हैं। नस्सन्देह तीनों काव्य-विधाओं में महाकवि की रचनाएँ सर्वोत्कृष्ट हैं।

कालिदास का जीवन-वृत्त

महाकवि कालिदास का जीवन-वृत्त अज्ञानान्धकार के पटलों में दब सा गया है। सम्भावना यही है कि दबा ही रहेगा। परिपुष्ट प्रमाणों के अभाव में कितनी कहानियाँ गढ़कर कालिदास के जीवन-वृत्त में रख दी गई हैं।

इन्हीं कल्पित कथाओं में से एक कथा के अनुसार कालिदास पहले एक निरक्षर एवं महामूर्ख थे। राजा शारदानन्द की एक कुमारी पुत्री थी, जिसका नाम था "विद्योत्तमा"। विद्वत्ता के गर्व एवं अनिन्द्य सौन्दर्य का अपूर्व संयोग उस कुमारी में विद्यमान था। उसने यह प्रतिज्ञा की थी कि जो व्यक्ति मुझको शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा, उसी विद्वान् के साथ उसका पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न होगा। विद्योत्तमा की विद्वत्ता के समक्ष बड़े-बड़े शास्त्रार्थी पण्डित परास्त हो गए। अतएव पण्डितों ने ईर्ष्यावश षडयन्त्र करके उसका विवाह किसी अत्यन्त मूर्ख व्यक्ति के साथ करा देने का निश्चय किया।

अनेक पण्डितों का समुदाय उस मूर्खप्रवर के अन्वेषण के लिए निकल पड़ा। अन्वेषण करते हुए उन पण्डितों ने देखा कि एक व्यक्ति, वृक्ष को जिस शाखा पर बैठा है, उसको काट रहा है। उन पण्डितों को आवश्यक वर प्राप्त हो गया। उन लोगों ने उस मूर्ख व्यक्ति से कहा कि 'हम लोग तुम्हारा विवाह एक परमसुन्दरी कन्या से करवा देंगे किन्तु तुम्हारे लिए आवश्यक है कि तुम मौन धारण किए हुए रहना, बोलना नहीं। यदि बोल दोगे, तुम्हारा विवाह कट जायगा। पण्डितों ने विद्योत्तमा के समीप उस मूर्ख को ले जाकर कहा कि ये हम लोगों के गुरुदेव हैं, जो परम विद्वान् हैं किन्तु इस समय मौनव्रत धारण किए हैं, ये संकेत द्वारा ही शास्त्रार्थ करेंगे। विद्योत्तमा ने एक अंगुली उठाकर यह संकेत किया कि ईश्वर एक है। परन्तु मूर्ख व्यक्ति ने यह समझा कि यह मेरी एक आँख को फोड़ देने का संकेत कर रही है, तो क्यों न उसकी दोनों आँखों को फोड़ देने का उत्तर दे दिया जाय। अत. दो अंगुलियाँ उठा दीं। बस, पण्डितों ने दो अंगुलियों के ऐसे तत्त्वपूर्ण शास्त्रीय अर्थ निकाले कि विद्योत्तमा को उस मूर्ख के साथ विवाह करना ही पड़ा।

मूर्खता प्रकट होने में देर ही कितनी लगती है। प्रथम वार्तालाप के अवसर पर ऊँट के स्वर को सुनकर विद्योत्तमा ने पूछा कि यह क्या है? तो उस मूर्ख ने उट्र कहकर अपनी मूर्खता का परिचय दे दिया। पण्डितों के षडयन्त्र से उत्पन्न अपनी इस दशा पर उसे घोर दुःख हुआ। क्रोधावेश में उन्मत्त होकर उसने मूर्ख पति को अपमानित करके घर के बाहर ढकेल दिया। पत्नी के द्वारा प्राप्त अपमान के घोर कष्ट से पीडित होकर वह मूर्ख काली देवी के मन्दिर में जाकर आत्महत्या करने के लिए उद्यत हो गया। भगवती प्रसन्न हो गई। बोली—वरं ब्रूहि। मूर्ख कालिदास ने विद्या की सिद्धि की याचना की। देवी ने कहा—"एवमस्तु"। फिर क्या था। कालिदास पूर्ण